संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - २६ ● २६ जून २०१८ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९

हरिद्वार चलो! **हरिद्वार चलो!** **हरिद्वार चलो!**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल महासम्मेलन 6, 7 एवं 8 जुलाई 2018 को

गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार में आर्यजन अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित कर सम्मेलन को सफल बनायें

– डॉ0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

आर्य समाज यदि जीवित है तो उसके पीछे आर्यवीरदल एवं गुरूकुलों का योगदन है प्रारम्भ से ही इन्हें उचित स्थान और सम्मान नहीं मिला है। आज गुरूकुल समाप्त होते जा रहे हैं कभी समय था जहाँ प्रत्येक गांव में एक गुरूकुल होता था जिसकी व्यवस्था गांव सभी लोग करते थे। मैकाले जब भारत आया उसने गुरूकुलों का संचालन की व्यवस्था देखी तब उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार से एक आचार्य सैकड़ों विद्यार्थियों को एक सूत्र में बांध रखा है गुरूकुलों अनुशासन देखकर दंग रहा गया। और उसके मन में योजना बनने लगी कि यदि हमें राज करना है तो यह गुरूकुल हमारी सबसे बड़ी बाधा है क्यो न इन गुरूकुलों को ही समाप्त कर दिया जाये, और वही हुआ आज गुरूकुल परम्परा समाप्त हो रही और मैकाले शिक्षा पद्यति ने अपने पैर मजबूती से जमा लिए है गुरूकुलों की व्यवस्था शिक्षा समान थी अमीर या गरीब सभी को सामान पढ़ने का अधिकार देती थी। लेकिन आज की शिक्षा पद्धति ने पुनः अमीर गरीब के भेदभाव में लाकर खड़ा कर दिया है अगर आपके पास धन है तो आप शिक्षा पाने के अधिकारी है क्योंकि शिक्षा इतनी महंगी है कि शिक्षा पाना गरीबों के लिए बहुत ही मुश्किल है।

और जो पढ़ा रहे है वह भी परेशान है क्योंकि आये दिन स्कूल की नयी योजनाए बनती है जिसका भुगतान उन्हें करना होता है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में गुरू शिक्षा की परम्परा में बालक का उपनयन और वेदारम्भ संस्कार होता था और यही से गुरू वर्ण व्यवस्था निश्चित करता था।

यह शिक्षा हमें संस्कारवान विद्वान आज्ञाकारी और देश भक्त बनाती थी लेकिन समय के साथ आज यह सब समाप्त हो गया गुरूकुल समाप्त होने लगे और हम हमारे परिवार संस्कारविहनी होने लगे। घटना जयश्रीवेन नाथवानी (राजकोट) की है जहां माँ की बीमारी से परेशान हो प्रोफेसर बेटे ने चौथी मंजिल से नीचे फेंका यह कोई पहली घटना नहीं है ऐसी अनेकों घटनाऐं हो रही रही हैं। इस शिक्षा पद्धति ने केवल हमे धन कैसे कमाया जाए ऐन केन प्रकारेण धन आना चाहिए। माता

शेष पृष्ठ ६ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दश उपनिषदों को प्रमाण माना है।

नेत्रस्थं जागरितं विद्यात् कण्ठे स्वप्नं समाविशेत्।
सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं मुर्ध्नि संस्थितम्।

अर्थात् जागृत अवस्था में आत्मा को नेत्र में जानें, स्वप्न में कण्ठ में रहता हैं, सुषुप्ति में हृदयस्थ रहता है और तुरीय में आत्मा मूर्धा में निवास करता है।

महर्षि दयानन्द के दश्या उपनिषदों को प्रमाण माना है, ग्यारहवें श्वेताश्वतर के प्रमाण भी महर्षि ने अपने ग्रन्थों में कहे हैं इसलिए इस उपनिषद् को भी मिलाकर ग्यारह उपनिषदें प्रामाणिक हैं। यह ब्रह्मोपनिषद् इन ग्यारह से अतिरिक्त है, इस उपनिषद् में पौराणिकता से युक्त बातें भी कही गई हैं जो कि आर्षानुकूल नहीं है। उपरोक्त श्लोक में आत्मा के कहे गये स्थान कितने युक्त हैं, आप करके देखे, जागते हुए जब हमें भय, दुःख, अशान्ति वा प्रसन्नता की अनुभूतियाँ हृदय में होती हैं तो आत्मा को वही मानना होगा, अर्थात् आत्मा का निवास स्थान हृदय है, इसलिए मैंने उस लेख में लिखा है कि आत्मा का मुख्य निवास स्थान हृदय है। इसी प्रकार स्वप्न में भय अथवा प्रसन्नता अनुभूति कहाँ होती है, उसको देख विचार करें, वह अनुभूति भी हृदय में ही मिलेगी क्योंकि जहां आत्मा है, वहीं उसी स्थान पर प्रसन्नता–अप्रसन्नता की अनुभूति वह करता है। इस प्रकार कहाना असंगत न होगा कि आत्मा का मल निवास स्थान हृदय है।

यदि आत्मा स्थान बदलता है तो हमें पता क्यों नहीं चलता? इसमें मैं इतना ही कहूँगा कि यह व्यवस्था ईश्वराधीन है। ईश्वर ने ऐसी अवस्था कर रखी है कि आत्मा स्थान बदलता है। यहाँ व्यवस्था ईश्वर की है और संचालक स्वयं आत्मा है।

स्थान बदलता है तो हमें पता क्यों नहीं चलता? इसको तो आप छोड़िए कितनी सारी स्थूल बातों का भी हमें पता नहीं चल पा रहा है। कैसे हमारे अन्दर भोजन का विखण्डन हो रहा है, उससे रक्तादि का निर्माण कैसे हो रहा है, हमारे पूरे शरीर के ऊपर रोम–बाल कितने हैं, नेत्र की संरचना कैसी है और भी बहुत सारी स्थूल बातों को हम नहीं जान पर रहे, जान पाते। और फिर आत्मा का विषय तो अति सूक्ष्म है। हाँ, हो सकता है इस स्थान वाली स्थिति को योगी लोग जान लेते हों।

आत्मा निराकार है वा साकार? मैंने अपने समाधान में आत्मा को निराकार लिखा, मेरे ऐसा लिखने पर आपने आर्ष प्रमाण माँगा है। मैं आपको आर्ष प्रमाण देने से पहले निवेदनपूर्वक पूछता हूँ कि क्या आपने साकार मानने वालों से और साकार के विषय में कोई एक–आधा आर्ष प्रमाण प्राप्त किया? अस्तु

१. ''बदला दिये जावेंगे कर्मानुसार।। और प्याले हैं भेर हुए।। जिन दिन खड़े होंगे रूह और फरिश्ते सफ बांधकर।। मं.७/सि.३०/सू. ७८/आ.२६/३४/३८ समीक्षा–यदि कर्मानुसार फल दिया जाता है तो......... और रूह निराकार होने से वहां खड़ी क्योंकर हो सकेगी।'' सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४।

२. ''इसी प्रकार भक्तों की उपासना के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि शरीर स्थित जो जीव हैं, वह भी आकार रहित हैं, यह सब कोई मानते हैं.... प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादों ही से सद्भावना और पूज्य बुद्धि मनुष्य के विषय में रखते हैं।' देखें पूना प्रवचन व्या. १।

३. ''प्रश्न–मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे करते बनेगा?

उत्तर–शब्द का आकार नहीं तो भी शब्द ध्यान में आता है वा नहीं? आकाश की आकार नहीं तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है वा नहीं? जीव का आकार नहीं तो भी जीव का ध्यान होता है वा नहीं?... पूना प्रवचन व्या. ४।

– सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

अठारह मार्ग ये हैं- उन में से १ (ऋणदान) किसी से ऋण लेने देने का विवाद। २ (निक्षेप) धरावट अर्थात् किसी ने किसी के पास पदार्थ धरा हो और मांगे पर न देना। ३ (अस्वामिविक्रय) दूसरे के पदार्थ को दूसरा बेच लेवे। ४ (सम्भूय च समुत्थानम्) मिल मिला के किसी पर अत्याचार करना। ५. (दत्तस्यानपकर्म च) दिये हुए पदार्थ का न देना।।२।।

६-(वेतनस्यैव चादानम्) वेतन अर्थात् किसी की 'नौकरी' में से ले लेना वा कम देना अथवा न देना। ७. (प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा से विरूद्ध वर्त्तना। ८. (क्रय-विक्रयानुशय) अर्थात् लेन देन में झगड़ा होना। ९. पशु के स्वामी और पालने वाले का झगड़ा।।३।।

१०- सीमा का विवाद। ११-किसी को कठोर दण्ड देना। १२-कठोर वाणी का बोलना। १३-चोरी डाका मारना। १४- किसी काम को बलात्कार से करना। १५- किसी की स्त्री वा पुरूष का व्यभिचार होना।।४।।

१६- स्त्री और पुरूष के धर्म में व्यतिक्रम होना। १७- विभाग अर्थात् दायभाग में वाद उठना। १८- द्यूत अर्थात् जड़ पदार्थ और समाह्य अर्थात् चेतन को दाव में धर के जुआ खेलना। ये अठारह प्रकार के परस्पर विरूद्ध व्यवहार के स्थान हैं।।५।।

इन व्यवहारों में बहुत से विवाद करने वाले पुरूषों के न्याय की सनातनधर्म के आश्रय करके किया करे अर्थात् किसी का पक्षपात कभी न करे।।६।।

जिस सभा में अधर्म से घायल होकर धर्म उपस्थित होता है जो उसका शल्य अर्थात् तीरवत् धर्म के कलंक को निकालना आर अधर्म का छेदन करते अर्थात् धर्मी को मान अधर्मी को दण्ड नहीं मिलता उस सभा में जितने सभासद् हैं वे सब घायल के समान समझे जाते हैं।।७।।

धार्मिक मनुष्य को योग्य है कि सभा में कभी प्रवेश न करे और जो प्रवेश किया हो तो सत्य ही बोले। जो कोई सभा में अन्याय होते हुए को देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरूद्ध बोले यह महापापी होता है।।८।।

जिस सभा में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते हुए मारा जाता है उस सभा में सब मृतक के समान हैं जानो उन में कोई भी नहीं जीता।।९।।

मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है इसलिये धर्म का हनन कभी न करना इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हम को न मार डाले।।१०।।

जो सब ऐश्वर्यों के देने और सुखों की वर्षा करने वाला धर्म है उस का लोप करता है उसी को विद्वान् लोग वृषल अर्थात् शूद्र और नीच जानते हैं। इसलिये किसी मनुष्य को धर्म का लोप करना उचित नहीं।।११।।

इस संसार में एक धर्म ही सुहृद है जो मृत्यु के पश्चात् भी साथ चलता है और सब पदार्थ वा संगी शरीर के साथ ही नाश को प्राप्त होते हैं अर्थात् सब का संग छूट जाता है परन्तु धर्म का संग कभी नहीं छूटता।।१२।।

जब राजसभा में पक्षपात से अन्याय किया जाता है वहां अधर्म के चार विभाग हो जाते हैं उनमें एक अधर्म के कर्त्ता, दूसरा साक्षी, तीसरा सभासदों और चौथा पाद अधर्मी सभी के सभापति राजा को प्राप्त होता है।।१३।।

जिस सभा में निन्दा के योग्य की निन्दा, स्तुति के योग्य की स्तुति, दण्ड के योग्य को दण्ड और मान्य के योग्य मान्य होता है वहां राजा और सभासद् पाप से रहित और पवित्र हो जाते हैं पाप के कर्त्ता ही पाप प्राप्त होता है।।१४।।

अब साक्षी कैसे करने चाहिए-

आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु कार्य्याः कार्येषु साक्षिणः। सर्वधर्मविदोऽलुब्धा विपरीतांस्तु वर्जयेत्।।१।।
स्त्रीणां साक्ष्यं स्त्रियः कुर्युर्द्विजानां सदृशा द्विजाः। शूद्राश्च सन्तः शूद्राणामन्त्यानामन्त्ययोनयः।।२।।
साहसेषु च सर्वेषु स्तेयसङ्ग्रहणेषु च। वाग्दण्डयोश्च पारुष्ये न परीक्षेत साक्षिणः।।३।।
बहुत्वं परिगृह्णीयात् साक्षिद्वैधे नराधिपः। समेषु तु गुणोत्कृष्टान् गुणिद्वैधे द्विजोत्तमान्।।४।।
समक्षदर्शनात्साक्ष्यं श्रवणाच्चैव सिध्यति। तत्र सत्यं ब्रुवन्साक्षी धर्मार्थाभ्यां न हीयते।।५।।
साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन्नार्य्यसंसदि। अवाङ्नरकमभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते।।६।।
स्वभावेनैव यद् ब्रूयुस्तद् ग्राह्यं व्यावहारिकम्। अतो यदन्यद्विब्रूयुर्धर्मार्थं तदपार्थकम्।।७।।
सभान्तः साक्षिणः प्राप्तान् अर्थिप्रत्यर्थिसन्निधौ। प्राड्विवाकोऽनुयुञ्जीत विधिनाऽनेन सान्त्वयन्।।८।।
यद् द्वयोरनयोर्वेत्थ कार्येऽस्मिंश्चेष्टितं मिथः। तद् ब्रूत सर्वं सत्येन युष्माकं ह्यत्र साक्षिता।।९।।
सत्यं साक्ष्ये ब्रुवन्साक्षी लोकानाप्नोति पुष्कलान्। इह चानुत्तमां कीर्तिं वागेषा ब्रह्मपूजिता।।१०।।
सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्द्धते। तस्मात्सत्यं हि वक्तव्यं सर्ववर्णेषु साक्षिभिः।।११।।
आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः। मावमंस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम्।।१२।।
यस्य विद्वान् हि वदतः क्षेत्रज्ञो नाभिशङ्कते। तस्मान्न देवाः श्रेयांसं लोकेऽन्यं पुरूषं विदुः।।१३।।
एकोऽहमस्मीत्यात्मानं यत्त्वं कल्याणं मन्यसे। नित्यं स्थितस्ते हृद्येषः पुण्यपापेक्षिता मुनिः।।१४।।

- मनु०

क्रमशः

आर्य जगत के नीतराम विद्वान् सन्यासी–

धरोहर...

पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

लोक भवन लखनऊ उत्तर प्रदेश सराकर द्वारा निर्मित एक भव्य भवन है जहां सरकार की ओर से कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर होता रहता है लेकिन आर्य जगत् के लिए गौरव की बात इतिहास के स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी कि एक आर्य सन्यासी जो वेदों के विद्वान् व्याकरण के सूर्य, योगविद्या पारगंत, षड्दर्शनों के ज्ञाता उपनिषदों के व्याख्याता, संस्कृत भाषा के उन्नायक, गुरूकुल प्रणाली के परिषेक्ता, भारतीय वैदिक संस्कृति के संरक्षक ब्रह्मचर्य की साधना से दिव्य तेज ओज की प्रतिमा युक्त तेजस्वी सन्यासी नक्षत्रों में चन्द्रमा की तरह शोभायमान थे जहाँ पूरे प्रदेश के वैदिक विद्वानों का सम्मान समारोह राज्य सरकार उ०प्र० संस्कृत अकादमी, के माध्यम से हो रहा है। उसमें महामहिम राज्यपाल महोदय श्री रामनाई जी अध्यक्षता कर रहे हैं तथा मुख्य अतिथि के रूप में मा० मुख्य मन्त्री जी श्री आदित्यनाथ योगी जी सुशोभित हैं दोनों के बीच में शोभयमान हैं आर्य जगत् के यशस्वी विद्वान् सन्यासी पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती आपको देखते ही मन मयूर अतीव प्रसन्न हुआ और उक्त मधुर स्मृतियों को सुरक्षित करने के लिए लोगों में प्रतिस्पर्धा होने लगी अकादमी के अध्यक्ष श्री आचार्य वाचस्पति मिश्र कार्यक्रम के संयोजक के रूप में मंच पर विराजमान थे पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा सुनाई गई पूरा कार्यक्रम संस्कृत भाषा में ही संचालित हुआ सारस्वत अतिथि पूज्य स्वामी जी का स्वागत सम्मान शाल–स्मृति चिन्ह एवं मालाओं द्वारा महामहिम राज्यपाल रामनाईक महोदय अध्यक्ष एवं मा० मुख्यमंत्री योगी जी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया यह आर्य जाति के लिए गौरव के क्षण थे दृश्य कितना मनमोहक भव्य, थे। जब राज्य सरकार की ओर से ब्रह्मर्षि पूज्य गुरूदेव जी का स्थापित एवं सम्मान किया जा रहा था। शिक्षा सचिव एवं ग्राम्य विकास मन्त्री श्री महेन्द्र सिंह जी भी कार्यक्रम की शोभा बढा रहे थे विद्वानों के सम्मान में हमारे मित्र वैदिक विद्वान् प्रसन्नचेता आर्य जगत् के गौरव श्री पं० प्रशस्य मित्र जी को भी उ०प्र० सरकार की ओर से वाल्मीकि पुरस्कार तथा विशेष पुरस्कार राजपाल श्री राम नाईक जी (उत्तर प्रदेश) द्वारा पुरस्कार के रूप में *शाल–माला* एवं दो लाख रूपये से सम्मानित कियागया। वेद कण्ठस्थ करने वाले एवं अन्य विद्वान् प्रदेश स्तर पर सम्मानित हुए संस्कृत विद्वान् छात्र एवं अन्य नेता उस भवन में विद्यमान थे मैं भी सभा कार्यालय से ८–१० लोगों को साथ लेकर गया था पूरे कार्यक्रम का विवरण कही पृथक् भी आपको पढ़ने को मिल जायेगा लेकिन हमारे लिए तो सुखद समाचार यही था कि एक ब्रह्मण आर्य सन्यासी के चरणों में राजर्षि योगी और राजा नमन कर रहे हैं आशीर्वाद ले रहे हैं यह क्षण मैं कभी भूल नहीं सकता।

मैं जब कभी इस दृश्य को स्मरण करता हूं तो पूज्य स्वामी जी के उस समय का रूप देखने लगता हूं जब आपके सर्व प्रथम मैंने दर्शन किये थे वर्ष १९६६–६७ में गुरूकुल झज्जर में मैं छोटा सा ही ब्रह्मचारी था लेकिन सर्वप्रिय था क्योंकि मुझे पूज्य स्वामी जी ओमानन्द जी भी अधिक स्नेह करते थे क्योंकि मैं ततारपुर से गया था और सेवा से सबका मन जीत लिया था बड़े छात्रों में ब्र० धर्मव्रत, ब्र० चन्द्रापाल जी, ब्र० इन्द्रपाल जी, ब्र० योगानन्द जी स्वामी जी की सेवा करते थे तो मैं उनका भी सहयोगी सेवा में होता था ब्र० हरिदेव जी भण्डारी थे उनसे समान लेना होता था उसी समय स्वामी विवेकानन्द जी सन्यासी के ही रूप में रहकर पढ़ने में अधिक समय लगाते थे तो हरयाणा के ब्र० शक्तिशाली होने पर कमजोर ब्र० को बलवान बनने की प्रेरणा दिया करते थे कभी व्यंग में भी उ०प्र० का उपहास किया करते थे मुझे स्मरण आ रहा है जब भोजनालय के लिए मोटे–मोटे लक्कड़ कुल्हाड़ी–छैनी–बड़ा हथोड़ा जिसे घण भी कहते हैं प्रयोग करके व्यायाम तथा काम दोनों ही करने अनिवार्य थे फिर अखाड़े में कुश्ती लड़ना भी अनिवार्य रहता था स्वामी जी का पर्याय गेहूँ की सफाई हेतु बड़ा छलना चलाना होता था कुल्हाड़ी के कार्य को दूसरे छात्र करते थे मेरा कार्य छैनी पकड़ना रहता था जो सबसे बड़ा खतरा था निशाना चूकने पर भयंकर घटना हो सकती थी, पर कभी ऐसा अवसर नहीं आया। स्वामी जी से ब्र० धर्म जीत जी ज्यादा ही कुछ कह देते थे लेकिन आप गम्भीर स्वभाव के थे और पढ़ने में ही अपना लक्ष्य रखते रहे व्याकरण महाभाष्य करके आप मेरठ प्रभात आश्रम में आ गए आपके साथ ब्र० वेदपाल जी सुनीथ और डा० सोमदेव शास्त्री जी भी आ गए थे। आर्य समाज थापर नगर, मेरठ तथा आर्य समाज बुढ़ाना गेट, मेरठ दो समाजें प्रभात आश्रम से अधिक जुड़ी थीं क्योंकि श्री पं० इन्द्र राज जी आर्य इस आश्रम के व्यवस्थापक थे भोजनादि सभी व्यवस्था आपके माध्यम से ही होती थीं स्वामी जी ने गुरूकुल में आकर प्रारम्भ में घोर तप किया मौन साधना स्वर साधना योग साधना विद्या साधना, स्वाध्याय से चमत्कारिक परिवर्तन आया संस्कृत सम्भाषण अनिवार्य होगा आचार्य श्री बलदेव जी वाला नियम चालू कर दिया लोगों में चर्चा हो गई वहाँ सभी संस्कृत पढ़ते हैं और संस्कृत ही बोलते हैं हिन्दी कोई भी कुलवासी नहीं बोल सकता ऐसी कठोरता से अनुशासन बनाया। तथा छात्रों में योग्यता का वातावरण बना गुरूकुल झज्जर की परीक्षायें प्रारम्भ हुई आर्ष परम्परा को जीवन्त करते हुए परिपुष्ट भी किया। स्वामी जी की दिनचर्या व्यवस्थित स्वयं में अनुशासित रही आन्तरिक नियमों के कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। श्री पं० इन्द्रराज जी बाहर से व्यवस्था किया करते थे।

एक समय ऐसा भी आया कि पूरे उत्तर प्रदेश में बड़े–बड़े आर्य महा सम्मेलन होने लगे उसमें यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी जी ही हुआ करते थे छात्रों का वेदपाठ भी भव्य होता था मेरठ–कानपुर–वाराणसी–लखनऊ शताब्दी पर भी स्वामी जी का यशोगान प्रत्येक आर्य कर रहा था। मुझे आर्य वीरदल उ०प्र० में कार्य करने का अवसर मिला तो स्वामी जी से जब अभिवादन करके आशीर्वाद लेता तो पूछा करते थे कि लाठी कैसी चल रही है? मेरा उत्तर था कि स्वामी जी आपका आशीर्वाद है पूज्य स्वामी जी मौन तथा मितभाषी स्वभाव के रहे हैं अतः मैं स्वामी जी से सदैव शिष्य के भाव से सम्मान करता हुआ मौन और संकोचवश मितभाषी ही रहा अतः कई बार अपने मन की बात चाहते हुए भी नहीं कह सका स्वामी जी गुरूकुल प्रभात आश्रम के कुलपति हैं लेकिन क्षेत्र में बड़ौत बरनावा पूरे क्षेत्र में वृहद् वेद पारायण यज्ञों की परम्परा डालकर आप द्वारा समय–समय पर उसे पोषित किया जा रहा है यह आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है मुझे भी यदा–कदा उधर जाने का सौभाग्य मिलता है तो सर्वत्र आपकी प्रशंसा सुनकर मन अहलादित हो उठता है और गर्व से मस्तक ऊँचा होता है गुरूकुल प्रभात आश्रम में मकर संक्रति पर्व पर विशेष सम्मेलन होता है अभी तक दो–तीन बार ही जाने का अवसर मिला है एक बार कीर्ति शेष पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के कक्ष में ही साथ रहने का अवसर मिला तब स्वामी जी २ दिनों तक अपनी प्रारम्भिक संस्मरणों से मेरा ज्ञानवर्धन करते रहे धनुर्विद्या उस समय तक प्रारम्भ नहीं की थी कहीं मेरठ अपना ग्रामीण आर्य समाजों के उत्सवों पर शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन भी प्रारम्भ नहीं किया था केवल मेरा ही उपयोग होता था बाद में स्वामी जी ने भी उसी परम्परा के कई छात्रों को प्रवीण कर दिया। व्याकरण, वेद, वेदांगों के ब्रह्मचारी स्नातक तैयार किये जो आज वि०वि० में कार्यरत हैं स्वामी जी ने एक शोध पत्रिका भी प्रारम्भ की जो अद्यतन चल रही है। संस्कृत भाषा के उन्नयन हेतु सदैव चिन्तन चलता रहता है। गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली में वैदिक विरक्त मण्डल की बैठक चर रही थी मैं विलम्ब से पहुंचा था अतः पीछे ही धीरे से बैठ गया स्वामी जी ने मुझे देख लिया था। सम्भवतया पूज्य स्वामी जी का ही सम्बोधन चल रहा था तभी उच्च स्वर में बोलते हुए कहा कि आप लोग अपने क्षेत्र में जाकर कार्य करें तभी आपके सन्यास आश्रम की सार्थकता है यहां स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी बैठे हैं दिन–रात कितना कार्य करते हैं इन्हें अपने संगठन का संगठन मन्त्री बनाओ फिर देखो कार्य कितना तेजी से आगे बढ़ेगा तभी सभी की दृष्टि मेरी ओर हुई और मुझे आगे बुलाकर उचित स्थान पर बैठाया मुझे लगा स्वामी जी के हृदय में मेरे प्रति कितना स्नेह एवं वात्सल्य है क्योंकि गुरू परम्परा में दीक्षित होने पर पूज्य गुरूदेव स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती से पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी के साथ ही सन्यास

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

पूज्य स्वामी विवेकानन्द...

ग्रहण किया था और गुरूदेव स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज ने आपसे ही सन्यास दीक्षा प्राप्त की है इस प्रकार दीक्षा गुरुजी के भी गुरू होने से हमारे पूज्य पितामह गुरू स्वतः ही बन गए और हमें उनसे स्नेह आशीर्वाद तथा वात्सल्य भाव प्राप्त करने का अधिकार प्रभु कृपा से प्राप्त हो गया। कई वर्ष पूर्व गुरूकुल मझावली हरयाणा में योग शिविर के अवसर पर मैं अन्तिम २ दिन तक रहा उसमें पूज्य स्वामी जी भी आये हुए थे आपके प्रवचन–उपदेशों को सुनकर मन में इच्छा जागृत हुई कि इन्हें भविष्य के लिए सुरक्षित करने के लिए लिखा जाये मैं लिखने लगा लेकिन कुछ प्रमाण भाग नहीं लिख सका कार्यक्रम के अन्त में पूज्य स्वामी जी के कक्ष में जाकर वार्ता करके प्रमाण भाग भी अंकित करके मुझे अतीव सुखानुभूति हुई थी। और पहली बार लम्बे समय तक आपसे वार्ता करने एवं कुछ उपदेश सुनने समझने का अवसर प्राप्त किया था तथा आपके वात्सल्य भाव से मन में बसी कठोरता की धारणा को निर्मल कर लिया था पूज्य स्वामी जी का उपदेश है कि पर्यावरण के लिए वृक्षों की मात्रा बढ़ाओं क्योंकि वृक्ष हजारों पक्षियों का आश्रय स्थल है सैकड़ों लोगों का आराम घर हैं एक औषधालय है जो प्रतिवर्ष नए फल फूल एवं पत्ते देकर हमें अरोग्यवान् बनाता है पीपल तो सदैव आक्सीजन देता ही रहता है भोजनालय भी है इतने उपकारी वृक्ष को काटकर हम पर्यावरण को भी दूषित करते हैं आज के समय तो वृक्षों की महत्ता और भी बढ़ गई है सेवा–साधना सन्तोष, स्वाध्याय, सन्ध्या द्वारा ही हमारा कल्याण सम्भव है सीधे सरल उपदेश ह्रदय को प्रभावित करते हैं सकारात्मक सोच के स्वामी जी पर्याय हैं। मेरठ नगर में विभिन्न प्रकार के समाज सेवी संगठनों द्वारा भी यदि कार्यक्रम होते हैं तो वहाँ स्वामी जी प्रसन्न्ता से जाकर आशीर्वाद देते है संस्कृत को वि.वि. में एम.ए. पर्यन्त रखने पर प्रदर्शन हो कुरीति उन्मूलन प्रदर्शन हो धर्मयात्राओं से भी आप सदैव प्रेरणा देते हैं मेरठ में आर. एस.एस. द्वारा युवा भारत कार्यक्रम हुआ मेरे जीवन का यह सबसे बड़ा कार्यक्रम था उसमें भी पूज्य स्वामी जी हिमालय की शिखा बनकर सर्वोच्च स्थान पर जो लगभग ४० फुट ऊँचा मंच था वहां आर्य सन्यासी के रूप में शोभयमान थे आपका भी सभी युवाओं को आशर्वाद मिला ऐसे गुरूवर का जितना भी यशोगान करें उतना ही कम है।

मैं आज अपने अन्तःकरण की पवित्र भावनाओं को आपके प्रति समर्पित करता हुआ परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वैदिक परम्परा यज्ञपरम्परा, आर्ष परम्परा सुरक्षित रहे स्वामी जी का आशीर्वाद हमें लम्बे समय तक इसी प्रकार मिलता रहे आप महर्षि के स्वप्नों को साकार करने के लिए हमें प्रेरणा प्रदान करते रहे पुनः आपके पावन चरण कमलों में नमन करता हूं।

मृत्यु पर विजय

– प्रताप कुमार 'साधक', लखनऊ

यमोदनं प्रथम जा ऋतस्य प्रजापतिस्त पसा ब्राह्मणोऽपचत्।
यो लोकानां विधृतिर्नाभिरेषात्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम्।। (अथर्ववेद 4.35.1)

(ऋतस्य प्रथमजाः, प्रजापतिः) ऋत के प्रथम प्रवर्त्तक प्रजापति ने (तपसा) तप से (यं ओदनं) जिस प्रकृति रूप ओदन को (ब्रह्मणे अपचत) जीव के लिए पकाया (अर्थात् कारण प्रकृति को कार्यरूप सृष्टि में परिवर्तित किया) (यः लोकानां विधृतिः) जो लोकों का विशेष धारण कर्त्ता और (नाभिः) केन्द्र है, (एषा तेन ओदनेन) उस प्रकृति रूपी ओदन के तत्वज्ञान से, और ईश्वर तथा प्रकृति के सम्बन्ध के उचित ज्ञान द्वारा (मृत्यु अति तरणि) मृत्यु को पार करूँ।

सभी प्राणी मृत्यु से भयभीत रहते हैं। संसार के दुःखों से त्रस्त मनुष्य भी सामान्यतः मरना नहीं चाहते। सभी के लिए मृत्यु दण्ड कठोरतम माना जाता है। जीवात्मा अनेकों पूर्व जन्मों में मृत्यु की पीड़ा भोग लेने के फलस्वरूप (चित्र में संस्कार जन्य स्मृति रहने से) उससे डरता है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उसकी मृत्यु का दिन कभी न कभी अवश्य आएगा, तथापि वह उक्त दिन को अनन्त काल तक टालना चाहता हूँ। प्रायः सभी जानते हैं कि जीवात्मा के शरीर ग्रहण करने को जन्म, शरीर में बने रहने को जीवन तथा शरीर को त्याग कर निकल जाने को मृत्यु कहते हैं। अतः यह शाश्वत सत्य है कि जन्म होने पर मृत्यु होना भी निश्चित है। वस्तुतः जीवात्मा के लिए शरीर से पृथक रहना (मृत्यु की स्थिति) ही स्वाभाविक स्थिति है। प्रलय की दीर्घ अवधि (4 अरब 32 करोड़ वर्ष) में प्रत्येक जीव अ-शरीर ही रहता है। कोई जीव शरीर के बन्धन में आना नहीं चाहता, किन्तु कृत कर्मों के फल भोगने तथा मोक्ष प्राप्ति के प्रयास करेन हेतु शरीर धारण करना पड़ता है, जिसके बाद उसे शरीर से वापस जाना होगा। अतः किसी की मृत्यु न हो - यह असम्भव है।

किन्तु वेदों की उपरोक्त ऋचा में मृत्यु को पार करने की चर्चा की गई है। कहा गया है कि परमेश्वर द्वारा पकाए गए ओदन भात को ठीक-ठीक जानकर उसकी सहायता से जीवात्मा मृत्यु को पार कर सकता है। महाप्रलय की समाप्ति पर ईश्वर की दिव्य शक्ति द्वारा प्रकृति की साम्यावस्था में अचानक गंभीर उद्वेलन प्रारम्भ होता हैं, जिसके परिणामस्वरूप महत्, अहंकार, मन, इन्द्रियों, सूक्ष्म भूत और पंच महाभूतों की उत्पत्ति होती है। उनसे विभिन्न लोकों, वनस्पतियों और शरीरों का निर्माण होता है। अर्थात् मनुष्य का शरीर, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, बुद्धि, मन आदि (जीवात्मा के अतिरिक्त) सभी कुछ उस प्रकृति से ही बनते हैं, जिसे ओदन कहा गया है।

शरीर में आने के बाद जीवात्मा प्रकृति के ही विभिन्न उत्पादों का प्रयोग करता है तथा सांसारिक भोग ही नहीं, वरन् अपवर्ग की प्राप्ति के लिए भी प्राण, चित्त (जैसे साकार) आदि प्रकृति जन्य उपकरणों का आश्रय लेता है। उपरोक्त जीवात्मा द्वारा प्रयोग- विधि के अनुसार ही भोग अथवा उपवर्ग की प्राप्ति कराने वाला होता है। भोजन, पानी, वायु, अग्नि तथा शरीर और मन-इन्द्रियों का प्रयोग भोगी भी करता है न इनके बिना सांसारिक सुखों की प्राप्ति हो सकती है और न निःश्रेयस की। किन्तु योगी इनका प्रयोग विवेक पूर्वक करता है जबकि भोगी अविवेक पूर्वक। अतः योगी जिन सांसारिक वस्तुओं व क्रियाओं में सुख मानता है, योगी उनमें छिपे दुःख को विवेक से जानकर उन्हें त्याग देता है। योगी जानता है कि सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु किए गए कर्म संस्कार और वासनाओं को उत्पन्न करते हैं, फलतः बारम्बार जीवात्मा को जन्म धारण करना पड़ता है तथा मरना पड़ता है। अतः वह तत्वज्ञान को प्राप्त करके, सकाम कार्मों को सर्वथा त्याग देता है। इसके लिए वह उसी पके हुए 'ओदन' का प्रयोग करता है। धीरे-धीरे वासनाओं के बन्धन समाप्त हो जाते हैं और संस्कार के बीज ज्ञानाग्नि नहीं बचता, अतः जीवात्मा जन्म के बन्धन से मुक्त होकर आनन्द स्वरूप ईश्वर में स्वतन्त्र विचरण करता हुआ आनन्द रूप हो जाता है।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मृत्यु बन्धन नहीं, अपितु जीवन ही बन्धन है, और मृत्यु से बचने के लिए जन्म से ही बचना होगा। मृत्यु तो उसकी भी होती है, जो मोक्ष प्राप्त करने वाला है। अतः वर्तमान बन्धन काल (जीवन) में ही ऐसा उपाय करना चाहिए कि अगला बन्धन प्राप्त न हो। यही मान जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। इसी के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य जन्म देता है। नामकरण संस्कार के समय पिता अपनी सन्तान से चार प्रश्न पूछता है-

मैं अविनाशी जीवात्मा हूँ।

मैं परम चेतन ईश्वर को ब्रह्मलोक से आया चेतन आत्मा हूँ।

मेरा नाम अमृत है, जिसने कभी न कभी अमरत्व (मोक्ष) का स्वाद प्राप्त किया है और आगे भी प्राप्त करूंगा।

अछुतोद्धार पर बलिदान

आर्य समाज के इतिहास के प्रारम्भिक दिनों की यह घटना है। पंजाब के रोपड़ नगर में एक पं0 सोमनाथ रहा करते थे। वे अपने नगर और आसपास के क्षेत्रों में अछूतोद्धार का काम बड़े उत्साह से करते थे। शहर और बिरादरी के लोग उनसे नाराज हो गए। उन्हें उनके परिवार को बिरादरी से गिरा दिया गया। पं0 सोमनाथ इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने जोहड़ों और नहरों से पानी लेकर पीना शुरू कर दिया वह पानी साफ नहीं होता था। इस पानी के निरन्तर सेवन करने से उनकी माता रोगी हो गयीं। डाक्टरी इलाज प्रारम्भ हुआ पर कोई लाभ नहीं हुआ। डाक्टरों ने कहा जब तक रोगी को कुएं का शुद्ध पानी नहीं पिलाया जायेगा तब तक उसे आराम नहीं होगा, पर कुएँ का पानी तो बिरादरी वालों से क्षमा मांगने और अछूतोद्धार कार्य छोड़ने पर ही मिल सकता था, पं0 सोमनाथ इसके लिए उद्यत न थे। उधर मां अच्छी नहीं हो रही थी। पं0 सोमनाथ उदास रहने लगे। माता ने उनकी चिन्ता भांप ली। उसने पुत्र से चिन्ता का कारण पूछा। पुत्र ने सब सच-सच बता दिया।

वीर माता ने रोग शय्या पर से मुस्करा कहा 'बेटा! " मैं कब तक जीती रहूंगी। मैंने तो एक दिन मरना ही है। अभी सही। तुम मेरी खातिर धर्म न छोड़ना, धर्म जान से भी प्यारी चीज है। वह मेरी जान से भी प्यारी है। तुम अपने धर्म पर डटे रहो। बेटे! मैं धर्म की खातिर हँसते-हँसते मरूँगी। और पं0 सोमनाथ की माँ सचमुच हँसती हुई मर गयी। पीछे से गाँव वालों ने पं0 सोमनाथ के परिवार को कुएं से पानी भरने की अनुमति दे दी।

सार- कर्तव्य महान् है। कर्तव्य स्वयं को और समाज को उन्नत व तेजस्वी बनाता है। धर्म ही कर्तव्य है। इसके लिए जो जीवन दान तक दे देते हैं। धन्य हैं वह मानव।

जटायु-सम्पाति

– आचार्य विश्वव्रत शास्त्री

पंचवटी को जाते हुए मार्ग में जब पहली बार राम ने जटायु को देखा तो उसे राक्षसों का ही पक्षधर समझकर उन्होंने उसका परिचय पूछा। तब जटायु- "उवाच वत्स मां विद्धि वयस्य पितुरात्मनः।" (अरण्य0 14/3) बोला-हे वत्स! तुम मुझे अपने पिता का मित्र जानो। "स तं पितृसखं बुद्ध्वा पूजयामास राघवः।" (अरण्य0 14/4) तब रामचन्द्र जी ने उन्हें अपने पिता का मित्र समझकर उनका सत्कार किया। तत्पश्चात् -"स तस्य कुलमव्यग्रमथ पप्रच्छ नाम च।" (14/4) रामचन्द्र जी ने शान्त होकर उनसे उनका नाम और कुल पूछा। इस पर-

रामस्य वचनं श्रुत्वा कुलमात्मानमेव च।
आचचक्षे द्विजस्तस्मै सर्वभूतसमुद्भवम्।15/5

राम के पूछने पर उन्होंने अपना नाम और कुल बताया और साथ ही सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति का वर्णन किया। यहाँ रामचन्द्र जी के बिना पूछे ही प्राणिमात्र की उत्पत्ति का वर्णन किया जाना अप्रासंगिक तथा प्रकरणविरूद्ध तो है ही, सर्वथा वेद के विपरीत था सृष्टिक्रम के विरूद्ध होने से निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है। जब रावण सीता को अपहरण करके ले जा रहा था, तब जटायु को देखकर सीता ने पुकार लगाई-

जटायो पश्च मामार्य ह्रियमाणामनाथवत्।
अनेन राक्षसेन्द्रेण करूणं पापकर्मणा। अरण्य0 46/38

हे आर्य जटायु! यह पापी राक्षसपति रावण मुझे अनाथ की भांति उठाए ले जा रहा है। यहां जटायु को आर्य और द्विज कहा है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की द्विज संज्ञा है। रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु कहते हैं- "जटायुर्नाम नाम्नाहं गृध्रराज महाबलः।" (अरण्य0 50/4)' मैं गृधकूट का भूतपर्वू राजा हूँ और मेरा नाम जटायु है। उस समय जटायु राजपाट का परित्याग कर वानप्रस्थ के रूप में वन में रहता था। जटाएं रखने के कारण वह जटायु के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। शासक होने से वह क्षत्रिय और क्षत्रिय होने से द्विजों के अन्तर्गत था। इस प्रकार (1.) आर्य होने, (2) द्विज होने और (3) महाराज दशरथ का मित्र होने से जटायु मनुष्य वर्ग के अन्तर्गत आता है, पक्षिवर्ग *के अन्तर्गत नहीं। आर्य परम्परा के अनुसार समय* आने पर वह वानप्रस्थ हो गया था। यह ठीक है कि पक्षी भी द्विज कहलाते हैं, पर वे न आर्य कहलाते हैं और न दशरथ के मित्र ही होते हैं और न कहीं के राजा।

अन्यत्र (अरण्य0 50/2) जटायु के लिए 'खगेश' या 'खगोत्तम' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'ख' का अर्थ 'आकाश' प्रसिद्ध है। 'ग' का अर्थ है गमन करने वाला। तब 'खगोत्तम' का अर्थ हुआ 'आकश में गमन करने वालों में सर्वश्रेष्ठ'। आकश में गमन उड़कर किया जाता है। इस प्रकार 'खगोत्तम' का अर्थ हुआ 'आकाश में उड़ान करने वालों में सबसे श्रेष्ठ'।

प्राचीन काल में आर्यों का ज्ञान-विज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। रामायण-काल में जहां पुष्पक विमान जैसे बड़े विमान होते थे, वहीं छोटे-छोटे विमान भी होते थे जिनमें एक-दो व्यक्ति बैठकर उड़ सकते थे। जहां कहीं जटायु रावण, हनुमान आदि के उड़ने का वर्णन आता है, वहां उनका इसी प्रकार के विमानों से उड़नपा समझना चाहिए। आजकल भी जब कोई बड़ा व्यक्ति विमान द्वारा विदेश जाता है तो कहा जाता है - **He flew to London or New York** जब रावण पंचवटी में सीता का अपहरण करने गया तो अपने स्वचालित विमान को सीता की कुटिया से कुछ दूरी पर खड़ा करके गया था और सीता को बलात् दबोच कर उसे विमान में अपने बराबर में बिठाकर ले उड़ा था।

रामायण के सुन्दरकाण्ड में हनुमान के लंका में उतरने (उत्पात) का जैसा वर्णन (सर्ग 1 श्लोक 42-43) मिलता है वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा वर्त्तमान में हैलीकाप्टर के हैलीपैड पर उतरते समय का होता है। वहाँ लिखा है-

उत्पपाताथ वेगेन वेगवानविचारयन्।
सुपर्णमिव चात्मानं मेने स कपिकुञ्जरः।।
समुत्पति तस्मिस्तु वेगात्ते नगरोहिणः।
संहृत्य विटपान् सर्वान् समुत्पेतुः समन्ततः।।

अपनी बाधाओं की उपेक्षा न करके अत्यन्त वेग से कूद पड़े। उस समय वनवासिश्रेष्ठ हनुमान् ने अपने को गरूड़ के समान समझा। वेगपूर्वक कूदते समय उनके वेगजनित वायुवेग से आस-पास के वृक्ष और उनकी शाखाएं और लतागुल्म उखड़ गए।

रावण और जटायु का युद्ध आकाश में हुआ था। दुर्जनतोषन्याय से यदि यह मान लिया जाय कि जटायु पक्षी था, तो भी रावण तो निश्चित रूप से मनुष्य ही था। तब रावण की तरह जटायु को भी अपने विमान पर सवार मनुष्य स्वीकार करने में क्या विसंगति हैं? वह भी एक भूतपूर्व राजा था।

संस्कृत में 'वी' पक्षी को कहते हैं, और 'मान' का अर्थ है- जैसा (सदृश)। इसलिए विमान का अर्थ हुआ पक्षी जैसा। लोकभाषा में विमान को चीलगाड़ी बोलते हैं,-विमान के डैने भी पक्षी के पंख (पक्ष) जैसे ही होते हैं।

पंचतन्त्र की एक कथा में लिखा है कि धूर्त मनुष्य विष्णु का रूप बनाकर गरूड़ की आकृति के वाहन पर सवार होकर आता था। गयाचिन्तामणि नाम ग्रन्थ में मयूर की आकृति के विमान का वर्णन है।

यहां बिजली से चलने वाले, अग्नि और जल से चलने वाले, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त मणियों से चलने वाले और केवल वायु से चलने वाले-आठ प्रकार के विमानों का उल्लेख हुआ है।

विमान प्रायः गरूड की आकृति के बनते थे, क्योंकि विष्णु नामक सम्राट् के वाहन की आकृति वैसी थी- 'यद्यदाचरित श्रेष्ठः लोकस्तदनुवर्त्तते'। आज भी इण्डोनेशिया में विमान को गरूड़ कहा जाता है, राजवल्ली चन्द्रवल्ली जैसे नामों से पुकारा जाता है।

विमानों के बनाने वाले कारीगर इस देश में बौद्धकाल तक रहे। रामचन्द्र जी से भेंट होने के बाद जटायु ने पंचवटी में रहते राम-लक्ष्मण की अनुपस्थिति में अपनी पुत्रवधू के समान सीता की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। तदनन्तर हम जटायु को सीता का अपहरण करके भागते हुए रावण से सीता की रक्षा के निमित्त लड़ता हुआ इसी प्रयास में प्राणों की आहुति देता पाते हैं। वहीं रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा था-

जटायुर्नाम नाम्नाहं गृध्रराजो महाबलः।
षष्टिवर्षोत्तरशतं मम जातस्य रावण।।
वृद्धोऽहं युवा धन्वी सशरः कवची रथी।
तथाप्यादाय वैदेहीं कुशली न गमिष्यसि।।
न शक्तरत्वं बलाद्धर्तु वैदेहीं मम पश्यतः।
हेतुभिर्न्यायसंयुक्तैर्ध्रुवां वेदश्रुतीमिव।। 50/4, 21, 22

हे रावण! मैं इस समय 160 वर्ष का हूँ और तुम अभी जवान हो और कवच, बाण और रथ आदि साधनों से युक्त हो। तभी तुम मेरे रहते बलपूर्वक सीता को नहीं ले-जा सकते, जिस प्रकार तर्क एवं हेतुओं से सिद्ध वेद का कोई खण्डन नहीं कर सकता।

जटायु ने पूरी शक्ति से युद्ध किया, परन्तु सीता को मुक्त न करा सके। "अभ्यधावत वैदेही स्वबन्धुमिव दुःखिता।" (51/4)रक्तरंजित जटायु को पृथिवी पर गिरा देखकर दुःखी सीता सगे-सम्बन्धी के समान जटायु की ओर दौड़ पड़ी। कुछ समय के बाद सीता की खोज करे हुए राम लक्ष्मण जटायु के पास पहुंचे। जटायु ने उन्हें बताया-

यामोषधिमिव युष्मन्नन्वेषसि महावने।
सा देवी मम च प्राणा रावणेनोभयं हृतम्।।
ह्रियमाणा मया दृष्टा रावणेन बलीयसा।। 67/15, 16

हे चिरंजीव! इस वन में औषधि के समान जिस सीता को तुम खोज रहे हो, उस जानकी को और मेरे प्राणों को रावण हर ले गया। शक्तिशाली रावण द्वारा हरी जाती हुई सीता को मैंने स्वयं देखा है।

यह सब जानकर राम ने जटायु को गले से लगा लिया और लक्ष्मण-सहित फूट-फूटकर रोने लगे। प्राण निकलने से पूर्व जटायु ने यह भी बता दिया कि रावण जानकी को दक्षिण की ओर ले गया है। रावण विश्रवा का पुत्र है तथा प्रसिद्ध कुबेर का सगा छोटा भाई है। इससे अधिक वह नहीं बोल सका और उसके प्राण निकल गए। उस समय राम के उद्‌गार-

सीताहरणजं दुःखं न मे सौम्य तथागतम्।
यथा विनाशे गृध्रस्य मत्कृते च परन्तप।।
राजा दशरथः श्रीमान् यथा मम महायशः।
पूजनीयश्च मान्यश्च तथायं पतगेश्वरः।।
सौमित्रे हर काष्ठानि निर्मथिष्यामि पावकम्।
गृध्रराज दिधक्ष्यामि मत्कृते निधनं गतम्।।

1. शोक समाचार

दिनांक ५ जून को बगहा, मीरजापुर आर्य समाज के मंत्री श्री अमर नाथ सिंह के बड़े भ्राता श्री कमला शंकर सिंह का आकास्मिक देहावसान हो गया। १४ जून को आर्यविधि में शान्ति यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। जिसमें जिले के सम्मानित आर्यपुरूष उपस्थित सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे।

2. शोक संवेदना

गुरूकुल पूठ– आदर्श गौशाला के प्रबन्धक अशोक कुमार त्यागी आर्य की पूज्य माता जी का ३० मई ४८ देहावसान होने पर गुरूकुल की यज्ञशाला में शान्ति यज्ञ किया गया तथा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया आचार्य दिनेश कुमार जी ने अशोक कुमार आर्य जी उकी माता जी की प्रशंसा करते हुए बताया कि माता जी का स्वभाव अति सरल सात्विक था स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मन्त्री ने बताया कि माता जी के संस्कारों को ही प्रभाव है कि जो अशोक कुमार आर्य जैसे समाज सेवी सुपुत्र तैयार किये बड़े पुत्र पुलिस अधिकारी है और धार्मिक स्वभाव के हैं स्याना नगर में परिवार की प्रतिष्ठा है राज मार्केट माता जी के नाम पर है ऐसी पवित्र भावना और संस्कारों का ही सुपरिणाम है गुरूकुल पूठ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की तथा परिवार को धैर्यधारण करने के लिए शोक संवेदना व्यक्त की।

3. श्रद्धांजलि सभा

बुलन्दशहर के पर्वू प्रधान सत्यवीर सिंह आर्य २० मई १८ को देहान्त हो गया। वे बड़े धार्मिक समाज सेवी तथा सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे। सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने बताया कि वे गुरूकुल विकास समिति में गुरूकुल स्थापना से लगातार जुड़े रहे। ग्राम में केई वर्षों तक आप लगातार उत्सव कराते रहे परिवार में विवेक आर्य–संजीव आर्य आर्यवीरदल से जुड़े हैं उनकी शोक सभा में आचार्य प्रमोद जी एवं स्वामी जी ने विचार व्यक्त किये यज्ञ में हरपाल सिंह आचार्य, राजवीर सिंह, हरवीर सिंह, प्रकाश सिंह, देवेन्द्र सिंह, रामवीर शर्मा, ऋषि देव आर्य, मनोज आर्य आदि–आदि ने आहुतियां प्रदान की तथा श्रद्धांजलि अर्पित की।

4. हार्दिक श्रद्धांजलि

राजा की सीकरी– (बदायूँ) के डॉ० ओमप्रकाश आर्य रस्तोगी जो विदेशों में रहने के बाद दिल्ली सेवा करने लगे थे वे आर्य समाज जनकपुरी नई दिल्ली के सदस्य थे एवं प्रधान श्री *शिवकुमार* मदान जी के समधी हो गए थे गुरूकुल पूठ एवं छोटे लाल स्मारक हाई स्कूल के अध्यक्ष रहे उनका निधन हो गया है उनका शान्ति यज्ञ हुआ तथा श्रद्धांजलि सभा की गई सभा परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांललि।

5. वेद प्रचार समारोह

४, ५ जून २०१८ को आर्य समाज भगवानपुर बांगर मेरठ के मन्त्री मनोज कुमार आर्य ने अपने निवास पर वेद प्रचार एवं यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें श्री कुलदीप विद्यार्थी, मा० हरीश पाल आर्य, उपेन्द्र कुमार आर्य के भजन हुए तथा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने रात्रि में भी और प्रातः यज्ञ के पश्चात भी उपदेश किया ग्राम वासी लाभान्वित हुए कार्यक्रम में सोममुनि, कृपाल सिंह शास्त्री, दर्शन पाल आर्य, रामवीर शास्त्री, ताराचन्द्र आर्य, शिवराम आर्य, तथा मनोज आर्य के सारे भाई उपस्थित रहे।

6. 3 जून को मु0 नगर में आर्य कार्यकर्त्ता द्वारा सभा मन्त्री स्वामी जी का भव्य अभिनन्दन

०३ जून– मा० गुरुदत्त आर्य के घर पर मुजफ्फर नगर में आर्य कार्य कर्त्ता गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के भविष्य पर विचार किया गया। स्वामी जी ने सभी आर्यों को उत्साहित करते हुए बताया कि आपके अनुभव और पुरुषार्थ से आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज गांधी नगर एवं नई मण्डी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

7. जिला सभा मीरजापुर द्वारा विश्वयोग दिवस

दिनांक २१ जून को साक्षी उपवन अदल पूरा चुनार में प्रातः ५ बजे से ८ बजे तक ब्लाक प्रमुख श्रीमती ममता सोनकर की अध्यक्षता में आसन, प्राणायाम आदि ५०० व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न कराया गया।

8. सहारनपुर में जिला आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन

१ जून–ग्राम हरपाल में सम्पन्न हुआ–सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने कार्यकर्ताओं सम्मेलन में कहा यह आर्य समाज के कार्यकर्ता ही आर्य आर्य समाज के सच्चे सिपाही हैं जो हर समय आर्य समाज के कार्य के लिए तन, मन, धन से लग जाते है और सारी व्यवस्था बनाते है आज समाज के प्रचार–प्रसार में कुछ कमी आयी है लेकिन इन कर्ताओं के रहते मुझे लगता है पूरा कर लिया जायेगा स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में गुरूकुल सम्मेलन ६, ७, ८ जुलाई को अधिक से अधिक संख्या में पहुचने की अपील की इस अवसर पर आर्य कर्ता तथा आर्य समाज के अधिकारी गण उपस्थित रहे।

जिला मन्त्री अवनीश आर्य पूर्व जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र शास्त्री, मु० नगर से ओमवीर सिंह शास्त्री एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री के अलावा पूरे जिले से आये उत्तम कार्यकर्त्ताओं को स्वामी जी ने सम्मानित किया बाद में आर्यवीरदल का शिविर लगाने पर बधाई दी तथा गुरूकुल सम्मेलन हरिद्वार चलने की प्रेरणा दी।

9. उत्सव एवं यज्ञ

आर्य समाज सूरज कुण्ड मेरठ का स्थापना दिवस भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ १८ जून से १ जौ० तक प्रतिदिन श्री योगेन्द्र जी याज्ञिक के प्रवचन एवं कुलदीप आर्य के सुमधुर भजन हुए आर्यजनता लाभान्वित हुई प्रधान श्री डॉ० आर.पी. सिंह जी ने संयोजन किया। मन्त्री सरयू प्रसाद पटेल एवं श्री अरूण महाजन कापूर्ण योगदान रहा।

10. आर्ष गुरूकुल पौन्धा–देहरादून

१, २, ३, जनू २०१८ को वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया वैदिक सिद्वान् श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी डॉ० रघुवीर वेदालंकार जी सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, डॉ० महावीर जी अग्रवाल नरेश दत्त आर्य, डॉ० विक्रम सिंह जी अध्यक्ष रहे। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने आशीर्वाद दिया वैदिक विद्वान् राजवीर शास्त्री जी के स्मृति ग्रन्थ का विमोचन किया गया स्थली प्रणवानन्द जी ने सभी का धन्यवाद दिया संयोजन प्रिय डॉ० रवीन्द्र शास्त्री जी ने सभी का धन्यवाद दिया संयोजन प्रिय डॉ० रवीन्द्र शास्त्री एवं डा० धनञ्जय आचार्य ने किया व्यायाम प्रदर्शन प्रभावशाली रहा इस कार्यक्रम में उ०प्र० हरयाणा दिल्ली पंजाब तथा उ०ख० से हजारों की संख्या में आर्यजनों ने आहुतियां प्रदान की गुरूकुल प्रगति कर रहा है यह श्रेय यज्ञवीर जी चन्द्र मोहन जी एवं धनञ्जय आचार्य को बधाई है।

निर्वाचन

1. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा आजमगढ़

प्रधान– दिनेश कुमार श्रीवास्तव

मन्त्री–रामनगीना आर्य

कोषाध्यक्ष–मुरारी लाल आर्य

2. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सुलतानपुर ⁄अमेठी

प्रधान–प्रयागदीन जायसवाल

मन्त्री– अरूण कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष– रोहित कुमार सिंह

3. आर्य समाज सिरसा, इलाहाबाद

प्रधान– शिव प्रसाद सिंह

मन्त्री– विजय बहादुर सिंह

कोषाध्यक्ष–सुख सागर सेठ

पृष्ठ १ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल महासम्मेलन...

पिता और समाज सेवा के लिए कोई स्थान नहीं है केवल पैसों का दास बना दिया है आज यदि गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवन्त नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब माता–पिता बनने से पहले एक लिए एक वृद्धा आश्रम भी तैयार करना होगा। इसलिए हमें आज गुरूकुलों को पुनः जीवान्त करना होगा अपने परिवार में गुरूकुली परम्परा को लाना होगा, इसलिए सार्वदेशिक सभा द्वारा गुरूकुल सम्मेलन का आयोजन किया है जिसमें देश के सभी गुरूकुलों को आमन्त्रण है हम सम्मेलन का सफल बनाने हेतु अधिक से अधिक संख्या में भाग लेवें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्णय आर्य समाज के इतिहास में नींव का पत्थर बनेगा जहां एकत्रित हो रहे है पूरे देश और विदेशों के गुरूकुल एकत्रित हो रहे है उनके आकर्षक कार्यक्रम देखने का अवसर आपको मिलेगा उनके आचार्यों के भाषण सुनने का भी सौभाग्य आपको प्राप्त होगा इसलिए प्रदेश की समस्त आर्य जनता से अनुरोध करता हूं कि आप स्वयं एवं परिवार आर्य समाज के परिवार–आर्य समाज के सभी सदस्यों को अधिक से अधिक संख्या में साथ लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपस्थली सर्व प्रथम गुरूकुल वि०वि० कांगड़ी अवश्यमेव पधारेगें।

आर्थिक दृष्टि से भी खर्च होता है उसके लिए भी आपका सहयोग तन, मन, धन के रूप में होना चाहिये। मेरी प्रदेश की आर्य समाजों/ जिला सभाओं से अपेक्षा है कि वे सम्पर्क करके गुरूकुल सम्मेलन को सुफल बनायेगें अपना पूर्ण योगदान प्रदान करेगें।

ओ३म्

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों/जिला प्रशासन/निबन्धक (विवाह पंजीयन)/निबन्धक/मण्डलीय उप निबंधक/सहायक निबन्धक, फर्म्स सोसायटीज एवं चिट्स तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम विज्ञापित पत्र।

विवाह सम्बन्धी आदेश/निर्देश

- **आर्य मैरिज वैलीडेशन ऐक्ट–19 ऑफ 1937 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों द्वारा विवाह कराये जाने हेतु उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा जारी आवश्यक निर्देश एवं औपचारिकता पूर्ति के सम्बन्ध में।**
- उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को अवगत एवं सूचित करना है, कि उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ सोसायटी रजिस्ट्रेशन ऐक्ट–1860 के अन्तर्गत एक पंजीकृत संस्था है तथा उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ है तथा इसी से प्रदेश की आर्य समाजें सम्बद्ध/पंजीकृत हैं। आर्य समाज के नियम–उपनियम सं0–40, 41 व 43 एवं संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की पंजीकृत नियमावली के नियम–68 के अन्तर्गत किसी भी आर्य समाज का अलग से पंजीकरण कराया जाना उपरोक्त नियमों के विपरीत एवं विधिशून्य है।
- **आर्य समाज के नियम– उपनियम– 40, 41, 43 निम्न प्रकार हैः–**
- "40– प्रत्येक प्रान्त में एक मुख्य सभा होगी, जिसका नाम आर्य प्रतिनिधि सभा होगा। सब समाजों की व्यवस्था उसी के अधीन तथा अनुकूल होगी। यह सभा अपने नियमादि स्वयं बनावेगी।"
- "41– स्थानीय समाज की ओर से प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की किसी आज्ञा व व्यवस्था का घोर और निरन्तर विरोध होने अथवा स्थानीय समाज में ऐसी अवस्था हो जाने पर जो प्रान्तीय सभा की सम्मति में समाज के लिए हानिकारक हो, प्रान्तीय सभा के प्रधान को अपनी अन्तरंग सभा की अनुमति से अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज के संगठन को नियत समय के लिए स्थगित कर देवे और समाज तथा समाज के अधीन संस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करावे।"
- "43– प्रान्तीय सभाओं से सम्बद्ध आर्य समाजों की रजिस्ट्री प्रान्तीय सभाओं से पृथक नहीं हो सकती। यदि कोई समाज अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक करायेगा और प्रान्तीय सभा चाहे तो वह धारा–41 के अनुसार उस समाज के विरूद्ध कार्यवाही कर सकती है।"
- **आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ का नियम–5 (ई), 16 (1 व 2), 37, 67 (1) एवं 68, निम्नवत् हैः–**
- **नियम 5 का तात्पर्य प्रधान के कर्त्तव्याधिकार से है–**
- **"5 (ई)– असाधारण परिस्थिति में वह विशेष साधनोपायों का प्रयोग करेगा और उस विषय को आगामी अन्तरंग में प्रस्तुत करेगा।"**
- **"16 (1)–किसी आर्य समाज या किसी आर्य संस्था की ओर से सभा की किसी आज्ञा व व्यवस्था का घोर और निरन्तर उल्लंघन होने अथवा स्थानीय आर्य समाज या आर्य संस्था में ऐसा कुप्रबन्ध हो जाने पर जो सभा की सम्मति से समाज या संस्था के लिए हानिकारक हो, सभा के प्रधान/मन्त्री को अन्तरंग सभा की अनुमति से, जिसके विज्ञापन विषयों में यह विषय भी समाविष्ट हो अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज या संस्था के संगठन को नियत समय के लिए स्थगित कर देवे अथवा भंग कर देवे, समाज तथा उसके अधीन संस्थाओं अथवा अन्य आर्य संस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करें या करावें परन्तु यह व्यवस्था एक वर्ष तक ही रहेगी आवश्यकता होने पर एक वर्ष की अवधि और बढ़ायी जा सकती है।"**
- **टिप्पणीः– इस खण्ड में प्रयुक्त आर्य संस्था की परिभाषा निम्न प्रकार हैः–**
- **आर्य संस्था से अभिप्राय उस संस्था से है जो किसी आर्य समाज व उस संस्था द्वारा जो आर्य समाज में श्रद्धा रखती हो या उस व्यक्ति के द्वारा जो आर्य समाजी हो, स्थापित या संचालित हो, या नियंत्रित हो अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश सं संबंधित हो, तथा आर्य प्रतिनिधि सभा या किसी आर्य समाज को उस संस्था के सम्बन्ध में कोई अधिकार प्राप्त हो।"**
- **"16 (2)– यदि किसी सम्बन्धित आर्य समाज का कोई आर्य सभासद आर्य समाज के सिद्धान्तों और उद्देश्यों अथवा वैधानिक नियमों के विरूद्ध आचरण और व्यवहार करता हो अथवा सभा की आज्ञाओं, की लगातार अवहेलना करता और उनको भंग करता हो, तो अन्तरंग सभा की स्वीकृति से प्रधान/मन्त्री सभा को अधिकार होगा कि उस सभासद को नियत अवधि के लिए स्थगित कर दे अथवा आर्य सभासदी से पृथक कर दे।"**
- **"37–यह प्रदेशीय न्याय सभा उन समस्त वादों और विरोधों को सुनेगी, जो प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बद्ध आर्य समाजों के मध्य 'उत्पन्न हुये हों, अथवा जो प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों के बीच सभा सम्बन्धी विषयों से सम्बद्ध और यह आर्य समाजों के सदस्यों के बीच उत्पन्न हुये ऐसे विवादों और मतभेदों को भी सुनेगी जिन्हें प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अथवा प्रदेशीय न्याय सभा के प्रधान निर्णयार्थ इसके समक्ष भेजेंगे। यह सभा स्थानिक न्याय के निर्णयों के विरूद्ध आयी हुई अपीलों (अभ्यर्थनाओं) को सुनेगी और उनका निर्णय करेगी।"**
- "67 (1)–सभी सम्बन्धित आर्य समाजों और उनकी संस्थाओं का धन गवर्नमेंट सिक्योरिटी अथवा अन्य किसी अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत व्यवस्था या बैंक में रहेगी।"
- **अतः उपरोक्त नियम के अनुसार बैंक में/स्वीकृत संस्था में, आर्य समाज का खाता खोलना अनिवार्य है।**
- "68–इस सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों आर्य शिक्षण संस्थाओं की रजिस्ट्री इस सभा से पृथक नहीं हो सकती। यदि कोई आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्था अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक करायेगा तो उसके विरूद्ध अनुशासन की कार्यवाही की जा सकती है।"
- **अतः सम्बद्ध आर्य समाजें एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की पृथक रजिस्ट्री सम्बन्धी प्रयास न करें तथा अनुशासनात्मक कार्यवाही से बचें।**
- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) की बैठक दिनांक–22 अप्रैल, 2018 में पारित प्रस्ताव के अनुपालन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ से सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि वे 25 जुलाई, 2018 के उपरान्त कोई भी विवाह आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करते हुए ही सम्पन्न करायेंगें तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा निर्गत विवाह प्रमाण पत्र के प्रारूप पर ही विवाह प्रमाण पत्र जारी करेंगे।
- विवाह प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि तीन प्रतियों में है, जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा जारी किये जाने की व्यवस्था कर दी गई है। अतः सभी सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपनी आवश्यकतानुसार प्रति विवाह प्रमाण–पत्र शुल्क रू0 500/– की दर से udn अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के नाम डिमाण्ड ड्राफ्ट बनवाकर संस्था कार्यालय–आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में जमा करके प्राप्त कर लें।
- **विवाह सम्बन्धी महत्वपूर्ण औपचारिकताएं निम्नवत् हैः–**
- 1– दोनों (लड़का एवं लड़की) पक्षों से विवाह सम्बन्धी प्रार्थना पत्र प्राप्त किया जाना।
- 2– लड़का व लड़की की तरफ से एफीडेविड (रू0 10–10 के स्टैम्प पेपर पर) नोटरी द्वारा प्रमाणित, जिसमें अविवाहित होने, विवाह विच्छेदन सम्बन्धित विवरण एवं आदेश की प्रति, पति एवं पत्नी में से किसी एक की मृत्यु सम्बन्धी प्रमाण पत्र तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं नियमों में पूर्ण आस्था एवं विश्वास रखने, तथा विवाह से पूर्व किसी थाने में प्राथमिकी दर्ज न होने, दहेज लेन–देन से मुक्त होने, परिवार के रजामन्दी अथवा अपनी स्वेच्छा से बिना किसी जोर–दबाव के तथा किसी भी तथ्य को छिपाने की दशा में आर्य समाज की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी, बल्कि स्वयं जिम्मेदार होने से सम्बन्धित शपथ पत्र प्राप्त किये जाने अनिवार्य होगें, यदि किसी प्रकार की कानूनी कार्यवाही पक्षकारों द्वारा की जाती है, तो उसका समस्त उत्तरदायित्व (मय खर्चा सहित) पक्षकारों का होगा।
- 3– वैदिक धर्म/हिन्दू मत के अतिरिक्त अन्य (मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई) मत के लड़का–लड़की के विवाह के लिए वैदिक धर्म/हिन्दू मत अपनाये जाने के लिए धर्म (मत) परिवर्तन हेतु शपथ पत्र प्राप्त करने के उपरान्त धर्म (मत) परिवर्तन किया जाएगा तथा विवाह से पूर्व परिवर्तित नाम किसी पंजीकृत अखबार में प्रकाशित कराया जाना अनिवार्य होगा।
- 4– आयु प्रमाण पत्र (हाई स्कूल का प्रमाण पत्र अथवा सी0एम0ओ0 द्वारा जारी आयु प्रमाण पत्र) बालिग होने से सम्बन्धित।
- 5– निवास प्रमाण पत्र (आधार कार्ड अनिवार्य रूप से)।
- 6– वर–वधू पक्ष से दो गवाह नाम पता एवं फोन नं0/मोबाईल नम्बर उनके आधार कार्ड सहित प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
- 7– लड़का–लड़की के 6–6 फोटो पासपोर्ट साईज के।
- **उपरोक्त औपचारिकताएं विवाह से पूर्व पूर्ण करा लेना होगा।**
- 8– विवाह मण्डप के तीन फोटो (जयमाल, सिंदूर दान एवं फेरे के)
- 9– विवाह पंजिका पर विवाह सम्बन्धी एक संयुक्त फोटो रजिस्टर पर चस्पाकिया जाना अनिवार्य होगा।
- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ से सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है, कि उपरोक्त निर्देशों का कड़ाई से पालन

शेष पृष्ठ ८ पर

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

पृष्ठ ७ का शेष

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों/जिला प्रशासन/निबन्धक (विवाह पंजीयन)......

किया जाये तथा नियमानुसार विवाह संस्कार सम्पन्न कराया जाये तथा स्वामिनी संस्था द्वारा निर्गत प्रमाण पत्र के प्रारूप पर ही विवाह प्रमाण–पत्र जारी किया जाये। आदेशों–निर्देशों के उल्लंघन करने की स्थिति में नियमानुसार यथोचित वैधानिक कार्यवाही करते हुए प्राथमिकी दर्ज करायी जाएगी तथा डुप्लीकेसी करने सम्बन्धी प्रकरण प्रकाश में आने पर जॉचोपरान्त सम्बन्धित आर्य समाज की मान्यता स्थगित/निरस्त कर संस्था के उपरोक्त नियमों के अन्तर्गत वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।

- उत्तर प्रदेश में संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ से सम्बद्ध आर्य समाजें किसी भी कार्य दिवस में विवाह प्रमाण पत्र उपरोक्तवत् निर्धारित शुल्क जमा करके प्राप्त कर सकते हैं।
- उपरोक्त आदेश/निर्देश/निर्णय संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक–22 अप्रैल,2018 में पारित प्रस्ताव के कम में जारी किये जा रहे हैं। अनुपालन किया जाना सुनिश्चित करें।
- उपरोक्त कार्यवाही इस आशय से जारी की जा रही है, क्योंकि प्रदेश में आर्य समाज एवं संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, के उपरोक्त नियमों, उप–नियमों के विपरीत अनाधिकृत एवं अपंजीकृत आर्य समाजों द्वारा मनमाने तरीके से विवाह प्रमाण पत्र जारी किये जाते हैं, जिस पर तत्काल प्रभाव से रोक लगायी जा सके।
- **नोटः–आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ से निर्गत एवं आर्य समाज से जारी विवाह प्रमाण पत्र खो–जाने/नष्ट हो जाने की स्थिति में नजदीकी थाने में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए रू0 10/– के स्टैम्प पेपर पर सम्बन्धित आशय का शपथ पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में जमा कर दूसरी प्रति के लिए नियमानुसार प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर प्राप्त किया जा सकता है।**
- **विवाह प्रमाण–पत्र का नमूना प्रति निम्नवत् प्रकाशित किया जा रहा हैः–**

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य समाज
(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com
विवाह प्रमाण-पत्र
क्रमांक : दिनांक : ....
सभा प्रति
आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री ....
पता .... का
विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता .... के
साथ "द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज .... कार्यालय पता ....
.... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।
गवाह का नाम व पता :
१. ....
२. ....
पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
प्रधान/मंत्री
नमूना प्रति

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य समाज
(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com
विवाह प्रमाण-पत्र
क्रमांक : दिनांक : ....
आर्य समाज प्रति
आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री ....
पता .... का
विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता .... के
साथ "द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज .... कार्यालय पता ....
.... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।
गवाह का नाम व पता :
१. ....
२. ....
पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
प्रधान/मंत्री
नमूना प्रति

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य समाज
(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com
विवाह प्रमाण-पत्र
क्रमांक : दिनांक : ....
आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री .... पता ....
का विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता ....
.... के साथ
"द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज ....
कार्यालय पता .... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।
गवाह का नाम व पता :
१. ....
२. ....
पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
प्रधान/मंत्री
नमूना प्रति

अन्तरंग अधिवेशन सूचना

(त्रुटि संशोधन)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहायुक्त एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक २२ जुलाई २०१८ दिन– रविवार, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पूर्वाह्न ११.०० बजे से स्थान– आर्य समाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में प्रधान/का० प्रधान डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाये।

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।